

आरती ओम जय जगदीश हरे

ॐ जय जगदीश हरे,स्वामी जय जगदीश हरे ।

भक्त जनों के संकट,दास जनों के संकट,क्षण में दूर करे ॥

॥ ॐ जय जगदीश हरे...॥

जो ध्यावे फल पावे,दुःख बिनसे मन का,स्वामी दुःख बिनसे मन का ।

सुख सम्पत्ति घर आवे,सुख सम्पत्ति घर आवे,कष्ट मिटे तन का ॥

॥ ॐ जय जगदीश हरे...॥

माता पिता तुम मेरे,शरण गहूं किसकी स्वामी शरण गहूं मैं किसकी ।

तुम बिन और न दूजा,तुम बिन और न दूजा,आस करूं मैं जिसकी ॥

॥ ॐ जय जगदीश हरे...॥

तुम पूरण परमात्मा,तुम अन्तर्यामी,स्वामी तुम अन्तर्यामी ।

पारब्रह्म परमेश्वर,पारब्रह्म परमेश्वर,तुम सब के स्वामी ॥

॥ ॐ जय जगदीश हरे...॥

तुम करुणा के सागर,तुम पालनकर्ता,स्वामी तुम पालनकर्ता ।

मैं मूरख फलकामी,मैं सेवक तुम स्वामी,कृपा करो भर्ता ॥

॥ ॐ जय जगदीश हरे...॥

तुम हो एक अगोचर,सबके प्राणपति,स्वामी सबके प्राणपति ।

किस विधि मिलूं दयामय,किस विधि मिलूं दयामय,तुमको मैं कुमति ॥

॥ ॐ जय जगदीश हरे...॥

दीन-बन्धु दुःख-हर्ता,ठाकुर तुम मेरे,स्वामी रक्षक तुम मेरे ।

अपने हाथ उठाओ,अपने शरण लगाओ,द्वार पड़ा तेरे ॥

॥ ॐ जय जगदीश हरे...॥

विषय-विकार मिटाओ,पाप हरो देवा,स्वामी पाप(कष्ट) हरो देवा ।

श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ,श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ,सन्तन की सेवा ॥

॥ ॐ जय जगदीश हरे...॥

ॐ जय जगदीश हरे,स्वामी जय जगदीश हरे ।

भक्त जनों के संकट,दास जनों के संकट,क्षण में दूर करे ॥

॥ ॐ जय जगदीश हरे...॥

